IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जिग्सा पद्धति: प्रभावशाली अधिगम पथ

सुनन्दा सिंह

शोध छात्रा

सी०एम० पी० कालेज, प्रयागराज

सार (Abstract)

शिक्षा के बदलते परिदृश्य के साथ विभिन्न शिक्षण रणनीतियों को लागू किया जा रहा है। इन रणनीतियों का उद्देश्य सहयोग और सहयोग के माध्यम से विद्यार्थियों में रुचि विकसित करना है।

सीखने के सहकारी रणनीतियों में जिगसॉ पद्धति को अत्यधिक प्रभावी पाया गया है। वर्तमान अध्ययन शिक्षा शिक्षण पद्धति की अवधारणा और प्रक्रिया को दर्शाता है। इस पद्धति को सामाजिक मनोवैज्ञानिक इलियट एरोनसन 1971 द्वारा विद्यार्थियों के बीच बंधन को मजबूत करने के लिए विकसित किया गया था।

जिगसॉ कक्षा, पारंपरिक कक्षा की तुलना में अधिक प्रभावशाली है। इस विधि में 10 आसान से चरणों का अनुसरण कर विद्यार्थियों में सामाजिक भावना, सहानुभूति, ज्ञान में वृद्धि एवं कक्षा के वातावरण में सुधार किया जा सकता है। यह पद्धति शिक्षकों को पहेली सीखने एवं अन्य शिक्षण विधियों के साथ इसका उपयोग करने में सहायक होती है। यह पद्धति विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने में सहायता प्रदान करती है तथा विद्यार्थियों को अन्य जातियों के विद्यार्थी के साथ मिलजुल कर रहने, विद्यालय को पसंद करने तथा अपनी अनुपस्थिति को कम करने में मदद करती है।

प्रस्तावना

जिगसॉ, अधिगम का आकलन करने की विधि है यह एक प्रकार की तकनीक है जो कक्षा की गतिविधि को व्यवस्थित करने एवं विद्यार्थियों को शिक्षा संबंधी समस्या में सफल होने के लिए एक दूसरे पर निर्भर बनाती है। इस पद्धति में कक्षाओं को समूहों में विभाजित कर समूह को एक असाइनमेंट दिया जाता है तथा प्रत्येक समूह अपने असाइनमेंट के प्रत्येक टुकड़े को इकट्ठा करता है और समाप्त होने पर अपने काम को संश्लेषित करते हैं। इस तकनीक को डिजाइन करने का श्रेय सामाजिक मनोवैज्ञानिक इलियट एरोनसन को जाता है।

1950 के दशक में अमेरिका पब्लिक स्कूल में कक्षाओं का वातावरण भेदभाव एवं घृणा से परिपूर्ण था। जिसमें एक समूह के छात्र वर्चस्व वादी एवं दूसरे समूह के छात्र घृणित हुआ करते थे अतः परिणाम स्वरूप दोनों ही समूह का एक ही कक्षा में साथ रह पाना मुश्किल हुआ करता था। ऐसी स्थिति में शिक्षको, विद्यार्थियों, माता-पिता, समुदायों और देश के लिए एक समस्या उत्पन्न हो गई थी कहने का आशय यह है कि विद्यार्थियों की एक पूरी पीढ़ी बड़े पैमाने पर भेदभाव एवं घृणा के कारण सीखने से विचलित हो गई थी।

ऐसे समय में इस समस्या को ठीक करने के लिए 1971 में इलियट एरोनसन को सलाह देने के लिए कहा गया। इलियट एरोनसन एक मनोवैज्ञानिक थे उन्होंने कक्षाओं के विद्यार्थियों में उत्पन्न भेदभाव एवं घृणा की समस्या को ठीक करने में मदद करने के लिए एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया। इस समस्या का समाधान करने के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न समूहों में रखा गया जिससे उन्हें एक साथ काम करने और प्रतिस्पर्धा के माहौल को कम करने की आवश्यकता हो परिणामस्वरूप विद्यार्थियों को कक्षा में समायोजित होने में कठिनाई हो रही थी एरोनसन ने सहयोग बढ़ाने और एक दूसरे के साथ काम करने के प्रतिरोध को कम करने के लिए एक वातावरण तैयार किया जिसमें ऐसे असाइनमेंट बनाए गए जो समूह के प्रत्येक सदस्य को समान रूप से महत्वपूर्ण बनाते थे अतः विद्यार्थियों को आपस में मिलकर काम करना और असाइनमेंट पर ध्यान देना था तथा समूह के अन्य सदस्यों से अधिक जानकारी प्राप्त करना था। इस असाइनमेंट में समूह के प्रत्येक सदस्यों को एक बड़ी तस्वीर के छोटे-छोटे टुकड़े को जोड़ने की अनुमति दी जाती है ताकि वे सभी समूह के लिए महत्वपूर्ण हो सके। यह असाइनमेंट विद्यार्थियों को एक दूसरे पर भरोसा करना सिखाता है और एक दूसरे के प्रति उनकी प्रतिस्पर्धा रवैया को कम करता है क्योंकि उन्हें अपने समूह में अच्छा प्रदर्शन करने की आवश्यकता होती है और उनका ग्रेड अन्य छात्रों पर भी निर्भर करता है।

यह तकनीक एक सहकारी सीखने की विधि है जो व्यक्तिगत जवाबदेही और टीम के लक्ष्यों की उपलब्धि दोनों पर निर्भर करती है। जिगसॉ पद्धति से संबंधित शोध जो बीज मैन और जान हैटी के द्वारा किया गया था बीजमैन ने पांचवी कक्षा का मूल्यांकन कर यह निष्कर्ष निकाला कि पारंपरिक कक्षा की तुलना में जिगसॉ कक्षाओं के छात्रों में अधिक सहानुभूति विकसित हुई जिसके लिए छात्रों ने 2 महीने आधे विषयों के जिगसॉ कक्षा में बिताए थे जबकि अन्य आधे पारंपरिक कक्षा में बिताए थे और निष्कर्षतः जिगसॉ कक्षाओं के परिणाम ज्यादा लाभकारी प्राप्त हुए।

उद्देश्य - प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अधिगम में जिगसॉ पद्धति की प्रभावशीलता की जांच करना।

जनसंख्या- इसके अंतर्गत प्रयागराज के दो माध्यमिक विद्यालय (द्वारिका प्रसाद गर्ल्स इंटर कॉलेज, आर्य कन्या गर्ल्स इंटर कॉलेज)का चयन किया गया ।

न्यादर्श- द्वारका प्रसाद गर्ल्स इंटर कॉलेज आर्य कन्या गर्ल्स इंटर कॉलेज के कक्षा 10 की 50 50 छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया ।

उपकरण- इस अध्ययन में जिगसॉ पद्धति के 10 चरणों की प्रक्रिया का अनुसरण किया जाएगा।

सांख्यिकी-इस अध्ययन में सांख्यिकी के लिए **विश्लेषण विधि** का उपयोग किया जाएगा। (विश्लेषण विधि एक शिक्षण विधि है जिसमें किसी समस्या को पहले छोटे-छोटे भागों में विभाजित किया जाता है उसके बाद समस्या के बारे में अध्ययन किया जाता है फिर उसके निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है।)

अध्ययन क्रियाविधि -जिगसॉ पद्धति शोध आधारित शिक्षण तकनीक है जिसका आविष्कार एवं विकास का श्रेय कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के इलियट एरोन्सन एवं उनके छात्रों को जाता है जिसे बाद में हजारों कक्षाओं ने बड़ी सफलता के साथ इस तकनीकी का प्रयोग किया। इलियट एरोन्सन ने इस पद्धति को प्रभावशाली एवं रुचिकर बनाने के लिए 10 आसान से चरणों में विभाजित किया। जो इस प्रकार हैं-

१ चरण- विद्यार्थियों को 5 या 6 जिगसॉ समूह में विभाजित किया जाता है। (लिंग, जातीयता, नस्ल एवं क्षमता के संदर्भ में समूह को विविध होना चाहिए।)

२ चरण- प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी को नेता नियुक्त करना। (प्रारंभ में वह विद्यार्थी समूह में सबसे परिपक्व छात्र होना चाहिए।)

३ चरण- संबंधित विषय को पांच या छह खंडों में विभाजित करना।

४ चरण- प्रत्येक विद्यार्थी को एक खंड सीखने के लिए सौंप देना।

५- चरण- विद्यार्थियों को अपने खंडों को कम से कम 2 बार पढ़ने और उसे अच्छे से समझने के लिए कहना।

६ चरण- प्रत्येक शिक्षा समूह के एक विद्यार्थी को उसी खंड को सौपे गए अन्य विद्यार्थियों से जुड़कर अस्थाई विशेषज्ञ समूह बनाना। (जो छात्र विशेषज्ञ समूह से है उन्हें अपने खंड के मुख्य बिंदुओं पर संवाद करने तथा छात्रों द्वारा समूह में प्रस्तुतियों का पूर्वाभ्यास करने का समय देना।)

७ चरण- विद्यार्थियों को उनकी शिक्षा समूहों में वापस लाना।

८ चरण- प्रत्येक विद्यार्थी से उनके खंड को समूह के सामने प्रस्तुत करने के लिए कहना।।

९ चरण- किसी समूह को परेशानी ना हो उसके लिए प्रक्रिया का अवलोकन करते हुए एक समूह से दूसरे समूह में जाना।

१० चरण-सत्र के अंत में खंड से एक प्रश्नोत्तरी देने का अवसर प्रदान करना। (जिससे विद्यार्थियों को पता चलता है कि यह सत्र केवल मजेदार और खेल नहीं है बल्कि वास्तव में यह ज्ञान को पूर्णता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं।)

क्रियान्वयन

अध्ययन के क्रियान्वयन में सर्वप्रथम द्वारिका प्रसाद गर्ल्स इंटर कॉलेज एवं आर्य कन्या गर्ल्स इंटर कॉलेज की 10वीं की छात्रा का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। कक्षा की छात्राओं को शिक्षा पद्धति की 10 चरणों को बताया गया तथा उन्हें प्रोत्साहित किया गया कि इस प्रकार की शिक्षण पद्धति से सीखने से छात्राओं को भविष्य में ज्ञानार्जन में वृद्धि होगी । कक्षा कक्ष में शिक्षा पद्धति के 10 चरणों का क्रियान्वयन किया गया-

१ -सर्वप्रथम छात्राओं को 5 जिगसॉ समूह में विभाजित किया गया।

२- प्रत्येक समूह से एक छात्रा को नेता के रूप में नियुक्त किया गया।

३- विज्ञान में कंप्यूटर विषय को पांच खंडों में विभाजित कर दिया गया जो इस प्रकार है-

- कंप्यूटर की उत्पत्ति
- कंप्यूटर के प्रकार
- कंप्यूटर के घटक
- कंप्यूटर के उपयोग
- कंप्यूटर के नुकसान

४- छात्राओं को एक-एक खंड अच्छे से समझने एवं सीखने के लिए सौंप दिया गया।

५- छात्राओं को अपने खंड को कम से कम 2 बार पढ़ने और उससे परिचित होने का समय दिया गया।

६-प्रत्येक जिगसॉ समूह की एक छात्रा को उसी खंड को सौपे गए अन्य छात्राओं से जुड़कर आई स्थाई "विशेषज्ञ समूह" बनाया गया।

७- विशेषज्ञ समूह से छात्राओं को उनके शिक्षा समूह में वापस आने के लिए कहा गया।

८- शिक्षा समूह में वापस आने के तत्पश्चात प्रत्येक छात्राओं को उसके खंड को समूह के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए कहा गया।

९- इस चरण में अध्ययन करता द्वारा प्रक्रिया का अवलोकन करते हुए एक समूह से दूसरे समूह का निरीक्षण किया गया। अवलोकन का मुख्य उद्देश्य किसी समूह की छात्राओं में परेशानी (उदाहरण के लिए कोई सदस्य हावी या विघटनकारी हो) होने पर उचित हस्तक्षेप करना।

१०- सत्र के अंत में खंड पर एक प्रश्नोत्तरी दी जाती है जिससे छात्राओं में आंतरिक अभिप्रेरणा विकसित हो। (इस पूरी प्रक्रिया में लगभग २ घंटे का समय लगता है)।

निष्कर्ष

जिगसॉ पद्धति अधिगम की एक ऐसी विधि है जिसमें शिक्षक एवं छात्रा दोनों को ही लाभ प्राप्त होता है अधिगमकर्ता जिगसॉ पद्धति से कक्षा में 10 चरणों का अनुसरण करके स्वयं में संवेगात्मक एवं सामाजिक भावनाओं का विकास करने में सक्षम हो पाते हैं।

यह पद्धति छात्राओं को आपस में समझने एवं समूह में सक्रिय रूप से भागीदारी के लिए अवसर प्रदान करती है जिससे छात्राओं को सहयोग से सीखने में मदद मिलती है क्योंकि समूह के सदस्य एक असाइनमेंट या खंड को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण सोच और सामाजिक कौशल का उपयोग करके एक दूसरे के सीखने में सहायता प्रदान करती हैं।

संदर्भ (Reference)

In Miller , R L.;Amsel, E.; Marsteller Kowalewski , B.; Beins, B.C.; Keith, K.D.; Peden, B.F.(eds.) (2011). Promoting student engagement - Volume 1: Programs, techniques and opportunities. Society for the teaching of psychology.pp.195-197.ISBN 978-1-941804-19-3.

Law,Y-K.(2011). The effect of cooperative learning on enhancing Hong Kong fifth grader's achievement goals,autonomous motivation and reading proficiency. Journal of Research in Reading ,34 (4) ,402- 425.

Crowne, T.S.,& Portillo,M C.(2013). Jigsaw variations and attitude about learning and the self in cognitive psychology. Teaching of psychology,40(3),246-251.

Moreno,R.(2009). Constructing knowledge with an agent based instructional program a compression of cooperative and individual meaning making. Learning and Instruction ,19 (5),433-444.

Aronson,E.(2008). Jigsaw classroom :overview of in technique.